खेलति मम हृदये रामः

पिलु - त्रिताल

खेलति मम हृदये रामः ।

मोहमहार्णव तारककारी राग द्वेषमुखासुर मारी ।

शान्तिविदेह सुतासहचारी दहरायोध्यानगरविहारी ।

परमहंस साम्राज्योद्धारी सत्यज्ञानानन्द शरीरी ।

——— सदाशिव ब्रह्मेन्द्र

ग	मग	ग	रे	–	ग	–	प	प	ध	नि	प	ध	प	–	–
रा	ऽऽ	म	ऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	ति	म	म	हृ	द	ये	ऽ	ऽ
प	–	प	ध	प	म	म	ग	–	गम	ग	रे	ग	–	प	–
मो	ऽ	ह	म	हा	र्‌	ण	व	ऽ	ताऽ	र	क	का	ऽ	री	ऽ
प	ध	सां	सां	–	सां	सां	रें	सां	नि	ध	प	ध	–	नि	–
रा	ऽ	ग	द्वे	ऽ	ष	मु	ऽ	ऽ	खा	सु	र	मा	ऽ	री	ऽ

स्वरमाला

राम भजनो का स्वरलिपि

Scripts Provided by

Sri Bhavatosh Dutta

Probationers' Training Centre
Ramakrishna Math
Belur Math
2014

भज मन रामचरण सुखदाई

भैरवी - त्रिताल
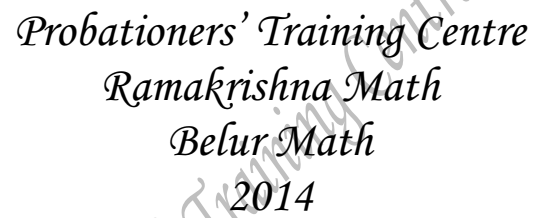
[सा	रे	ग	म	म	–	रे]									
सा	ध	प	म	ग	–	रे	सा	ध	नि	सा	सा	गरे	गरे	सा	–
भ	ज	म	न	रा	ऽ	म	च	र	ण	सु	ख	दाऽ	ऽऽ	ई	ऽ
सां	सां	सां	सां	सां	सां	रेंसां	नि	नि	ध	नि	ध	ध	प	–	–
जि	हि	च	र	णन	से	ऽ	नि	क	ली	सु	र	स	रि	ऽ	ऽ
प	ध	प	म	प	ध	नि	सां	–	निध	निध	प	–	–	–	–
श	ङ्	क	र	ज	टा	ऽ	स	ऽ	माऽ	ऽऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	ध	ध	ध	ध	ध	प	धप	म	ग	म	म	प	–	–	–
ज	टा	ऽ	शं	क	री	ना	ऽऽ	म	प	र	यो	है	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	सा	नि	सा	रे	ग	म	गरे	गरे	सा	–	–	–	–	–
त्रि	भु	व	न	ता	ऽ	र	ण	आऽ	ऽऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

2014 Probationers' Training Centre, Belur Math

भज मन रामचरण सुखदाई

भैरवी - त्रिताल

भज मन रामचरण सुखदाई ॥
जिहि चरणन से निकली सुरसरि शङ्कर जटा समाई ।
जटाशंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारण आई ॥
जिन चरणन की चरण पादुका भरत रह्यो लव लाई ।
सोइ चरण केवट धोइ लीने तब हरि नाव चलाई ॥
सोइ चरण सन्तन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ।
सोइ चरण गौतमऋषिनारी परसि परमपद पाई ॥
दण्डकवन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोइ प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा सङ्ग धाई ॥
कपि सुग्रीव बन्धु भयव्याकुल तिन जग छत्र धराई ।
रिपु को अनुज बिभीषण निशिचर परसत लंका पाई ॥
शिव सनकादिक अरू ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई ।
तुलसीदास मारुतसुत की प्रभु निज मुख करत बडाई ॥

––– तुलसीदास

Index

श्रीदशरथ नन्दन पादारविन्द वन्दरे

साहाना — एकताल

श्रीदशरथ नन्दन पादारविन्द वन्दरे ।
राम सीता राम राम गाओ अविराम् छन्दरे ॥
मारुति प्रीति वर्धन मकरध्वज मर्दन ।
यम यन्त्रणा भञ्जन भज रघुकुल चन्दरे ॥
नधर दूर्वाश्यामल नयनानन्द निर्मल ।
मण्डित जटा मण्डल मुखे हासि मृदुमन्दरे ॥

--- स्वामी तपानन्द

म	–	रे	सा	नि̣	नि̣	सा	सा	रे	रे	–	–
श्री	ऽ	द	श	र	थ	न	न्	द	न	ऽ	ऽ
सा	रे	–	प	प	प	प	म	प	म	ग	–
पा	दा	ऽ	र	वि	न्	द	व	न्	द	रे	ऽ
नि	ध	प	ध	पम	प	नि	सां	नि	सां	–	सां
रा	ऽ	म	सी	ऽऽ	ता	रा	ऽ	म	रा	ऽ	म
य	ऽ	म	य	न्त्र	ना	भ	ऽ	ञ्ज	न	ऽ	ऽ
म	ण्	डि	त	ज	टा	म	ण्	ड	ल	ऽ	ऽ
सां	रें	सां	नि	ध	प	म	पध	प	म	ग	–
गा	ओ	अ	वि	रा	म	छ	न्	द	रे	ऽ	ऽ
भ	ज	र	घु	कु	ल	च	न्	द	रे	ऽ	ऽ
मु	खे	हा	सि	मृ	दु	म	न्	द	रे	ऽ	ऽ
नि	–	धप	ध	म	प	नि	सां	नि	सां	–	–
मा	ऽ	रु	ति	प्री	ति	व	र्	ध	न	ऽ	ऽ
न	ध	र	दू	र्	र्वा	श्या	ऽ	म	ल	ऽ	ऽ
नि	सां	रें	–	सां	रें	मं	गं	मं	रें	सां	–
म	क	र	ऽ	ध्व	ज	म	र्	द	न	ऽ	ऽ
न	य	ना	ऽ	न	न्द	नि	र्	म	ल	ऽ	ऽ

घुंघट का पट खोलरे

कानाडा – कहरवा

घुंघट का पट खोलरे तोहे राम मिलेंगें ।
घट घट रमता राम रमैया कटुक वचन मत बोलरे ॥
रंग महल में दीप भरत है आसन से मत डोलरे ॥
धन यौवन का गर्व न कीजै झुटा पञ्चरंग चोल रे ॥
जाग जुगुत सों रंगमहल में पिय पायो अनमोल रे ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो अनहत बाजत डोलरे ॥

––– कबीर

म	–	–	प	म	प	सां	नि	ध	नि	धप	म	म	गम	प	म
घुं	घ	ट	का	ऽ	प	ट	खो	ऽ	ल	रे	ऽ	तुझे	राऽ	म	मि
ग	रे	ग	रेसा	म	–	–	प	म	ग	प	म	–	–	–	–
लें	ऽ	गें	ऽऽ	घुं	घ	ट	का	ऽ	प	ट	खो	ऽ	ल	ऽ	ऽ
म	प	नि	–	सां	–	–	–	नि	रें	सां	नि	ध	नि	ध	प
घ	ट	घ	ट	र	म	ता	ऽ	रा	ऽ	म	र	मै	ऽ	या	ऽ
म	–	–	प	म	प	सां	नि	ध	नि	धप	म	म	गम	प	म
क	टु	क	व	चन	म	त	बो	ऽ	ल	रे	ऽ	तुझे	राऽ	म	मि
ग	रे	ग	रेसा	म	–	–	प	म	ग	प	म	–	–	–	–
लें	ऽ	गें	ऽऽ	क	टु	क	व	चन	म	त	बो	ऽ	ल	ऽ	ऽ

जय जय आरति राम तुम्हारी

देश-त्रिताल

जय जय आरति राम तुम्हारी प्राननाथ रघुनाथ मुरारी ।।
सुकनारदमुनि सादर गावे भरत सत्रुघन चँवर डुलावे ।।
पीतवसन बैजंतीमाला मेघवरनतनु नयन बिसाला ।।
छत्र धरत है लछुमन भ्राता
आरति करत है कौसल्या माता ।।
सम्मुख सरण रहे हनुबीरा बार बार गुन गावे कबीरा ।।

- कबीरदास

ध	प	म	ग	–	ग	म	पध	नि	धप	मप	मग	म	–	म	–
ज	य	ज	य	ऽ	आ	ऽ	रति	रा	ऽऽ	मऽ	तुम्	हा	ऽ	री	ऽ
नि	प	नि	–	सां	–	–	–	सांरें	सांरें	सांनि	नि	धप	धप	म	ग
प्रा	ऽ	ण	ना	ऽ	थ	र	घु	नाऽ	ऽऽ	थ	मु	राऽ	ऽऽ	री	ऽ
सां	–	नि	धनि	सां	–	–	–	सांरें	सांरें	सांनि	नि	धप	धप	म	–
सु	क	ना	ऽऽ	र	द	मु	नि	साऽ	ऽऽ	दऽ	र	गाऽ	ऽऽ	वे	ऽ
नि	–	–	–	–	–	निसां	निसां	ध	ध	प	म	मप	धप	म	ग
भ	र	त	श	त्रु	ऽ	घऽ	नऽ	चँ	व	र	डु	लाऽ	ऽऽ	वे	ऽ
नि	प	नि	नि	सां	–	–	–	सांरें	सांरें	सांनि	नि	धप	धप	म	–
पी	ऽ	त	व	स	न	वै	ऽ	जऽ	ऽऽ	यऽ	न्ति	माऽ	ऽऽ	ला	ऽ

इतनि मिनति रघुनन्दन से

सिन्धु खम्बाज-कावाली

इतनी मिनति रघुनन्दन से दुःख द्वन्द्व हमारो मिटाओ जी ।

अपने पदपङ्कजपिञ्जर में चितहंस हमारो बैठाओ जी ।।

तुलसीदास कहे कर जोडी भवसागर पार उतारो जी ।।

- तुलसीदास

स	ग	ग	ग	ग	म	रे	ग	म	प	प	म	प	–	म	ग
इ	त	नि	मि	न	ति	र	घु	न	न्	द	न	से	ऽ	दुः	ख
म	प	प	प	धप	ध	सां	नि	ध	म	–	ग	–	नि	नि	–
द्व	न	द्व	ह	माऽ	ऽ	रा	मि	टा	ऽ	ओ	ऽ	जी	ऽ	दुः	ख
हं	ऽ	स	ह	माऽ	ऽ	रा	बै	ठा	ऽ	ओ	ऽ	जी	ऽ	चि	त
सा	ऽ	ग	र	पाऽ	ऽ	रा	उ	ता	ऽ	रो	ऽ	जी	ऽ	भ	व
नि	–	नि	नि	नि	–	नि	सां	ध	नि	सां	रें	सा	–	म	ग
द्व	न	द्व	ह	माऽ	ऽ	रा	मि	टा	ऽ	ओ	ऽ	जी	ऽ	दुः	ख
हं	ऽ	स	ह	माऽ	ऽ	रा	बै	ठा	ऽ	ओ	ऽ	जी	ऽ	चि	त
सा	ऽ	ग	र	पाऽ	ऽ	रा	उ	ता	ऽ	रो	ऽ	जी	ऽ	भ	व
सां	रें	सां	सां	नि	नि	ध	ध	ध	सां	नि	ध	प	–	म	ग
अ	प	ने	प	द	प	ङ्क	ज	पि	ऽ	ञ्ज	र	मे	ऽ	चि	त
												[नि	ध	म	ग]
सां	रें	मं	–	नि	–	ध	–	म	ध	नि	सा	नि	ध	प	–
												[जो	डी	भ	व]
तु	ल	सी	ऽ	दा	ऽ	स	ऽ	क	हे	क	र	जो	ऽ	डी	ऽ

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजँनियो

खम्बाज — एकताल

[ध	प	म	ग	म	प]	[रेम	पध	प	म	रेसा	रे]
ग	म	ग	म	म	प	ग	म	ग	रे	सा	रे
ठु	म	कि	च	ल	त	रा	ऽ	म	च	ऽ	न्द्र
सा	रे	म	म	मप	ध	ध	ध	मप	धनि	पध	नि
बा	ऽ	ज	त	पैँऽ	ऽ	ज	नि	याऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	म	ध	–	नि	सां	सां	नि	सां	–	सां
कि	ल	कि	ला	ऽ	ई	उ	ठ	त	धा	ऽ	य
तु	ल	सी	दा	ऽ	स	अ	ति	आ	न	ऽ	न्द
अ	ऽ	ङ्ग	र	ऽ	जः	अ	ऽ	ङ्ग	ला	ऽ	ई
			[धनि	सांरें	सां]						
नि	नि	नि	निरें	सांरें	सां	ध	सां	नि	ध	–	ध
गि	र	त	भूऽ	ऽऽ	मि	ल	ट	प	टा	ऽ	य
हे	र	त	मुऽ	ऽऽ	खा	ऽ	ऽ	र	वि	ऽ	न्द
वि	वि	ध	भाँऽ	ऽऽ	ति	सौं	ऽ	दु	ला	ऽ	र
नि	–	नि	नि	–	नि	धनि	सांरें	सां	नि	–	ध
धा	ऽ	यी	मा	ऽ	तू	गोऽ	ऽऽ	द	ले	ऽ	त
र	घु	व	र	की	ऽ	छऽ	विऽ	स	मा	ऽ	न
त	न	म	न	ध	न	बाऽ	ऽऽ	र	बा	ऽ	र
प	ध	प	म	ग	म	रे	म	रेम	पध	पध	नि
द	श	र	थ	की	ऽ	रा	नी	याँऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
र	घु	व	र	छ	वि	बा	नि	याँऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
क	ह	त	मृ	दु	ऽ	बा	नि	याँऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजँनियो

खम्बाज – एकताल

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजँनिया ॥

किल किलाय उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय ।

धाई मातु गोद लेत दशरथकी राणियाँ ॥

आँचल रज अङ्ग झारि, विविध भाँति सो दुलारि ।

तन मन धन वारि वारि कहत मृदु वाणियाँ ॥

तुलसीदास अति आनन्द हेरत मुखारविन्द ।

रघुवरकी छवि समान रघुवर छविवाणियाँ ॥

––– तुलसीदास

पायोजी मैने राम रतन धन पायो

पहाडि - त्रिताल

पायोजी मैंने राम रतन धन पायो ।।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु किरपा कर अपनायो ।।
जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो ।।
खरचै न खूटै वाको चोर न लूटै
दिन दिन बढत सवायो ।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरख हरख जस गायो ।।

- मीरा

सा	रे	म	म	प	ध	ध	ध	सा	नि	ध	प	म	पध	प	म
पा	यो	जी	ऽ	मै	ने	ऽ	रा	ऽ	म	र	त	न	धन	पा	यो
म	–	–	–	म	म	ध	नि	सां	–	–	–	नि	सां	नि	सां
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	स	तु	अ	मो	ऽ	लिक	ऽ	दी	ऽ	मे	रे
ध	निसां	नि	ध	ध	ध	नि	रें	सां	नि	ध	प	म	म		
स	दऽ	गु	रु	ऽ	कि	र	पा	ऽ	क	रे	आ	प	ना	ऽ	यौ

रामं घनश्यामं गुणधामं रम्यनामम्

बागेश्री – कहरवा

रामं घनश्यामं गुणधामं रम्यनामम् ।
क्षेमं मुखसोमं रिपुभीमं चित्तकामं भजे ।।
वीरं मेरु धीरं सुकुमारं आत्मसारम् ।
शूरं सर्वाधारं सद्विचारं शुभाकारं भजे ।।
ध्यानं चित्तलीनं स्मृतिमानं दयास्थानम् ।
ज्ञानं स्वयंभानं कामधेनुं श्रुतिमानं भजे ।।
वेदं वेदगीतं निजबोधं विश्वातीतम् ।
मोदं दशनादं कविनोदं मृदुपादं भजे ।।
श्रीशं श्रीनिवासं मन्दहासं चिद्विलासम् ।
भासं चित्तहासं अच्युतेशं भवनाशं भजे ।।

														ध	नि
														भ	जे
सां	–	नि	नि	सां	नि	ध	–	ध	नि	ध	म	ग	रे	ग	म
रा	ऽ	मं	घन	ऽ	श्या	मं	ऽ	गु	ण	धा	मं	र	म्य	ना	मं
ग	रे	म	ग	ग	म	ग	रे	रे	ग	रे	सा	ऩिध़	ऩि	सा	–
ऽ	ऽ	क्षे	मं	मु	ख	सो	मं	रि	पु	भी	मं	चिऽ	त्त	का	मं

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई

बिलावल – एकताल

ध	–	ध	प	प	ध	म	प	म	ग	रे	सा
सी	ऽ	ता	ऽ	प	ति	रा	ऽ	म	च	न्	द्र
सा	रे	म	म	म	प	ध	–	–	पध	नि	–
र	घु	प	ति	र	घु	रा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ई	ऽ
म	म	नि	–	नि	–	नि	सां	सां	नि	ध	–
भ	ज	ले	ऽ	अ	ऽ	यो	ऽ	ध्या	ना	ऽ	थ
ई	ऽ	ष	त	मु	ख	च	न्	द्र	बि	न्	दु
ध	ध	नि	ध	प	म	ध	–	–	पध	नि	–
दू	स	रा	ऽ	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽऽ	ई	ऽ
सु	न्	द	र	सु	ख	दा	ऽ	ऽ	ऽऽ	यी	ऽ
ध	ध	प	म	म	प	ध	–	ध	नि	ध	–
र	स	ना	ऽ	र	स	ना	ऽ	म	ले	ऽ	त
म	ध	नि	सां	–	नि	नि	रें	सां	नि	ध	–
स	न्	त	ऽ	न	को	द	र	श	दे	ऽ	त

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई

बिलावल – एकताल

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई ।
भजले अयोध्यानाथ दूसरा न कोई ॥
रसना रस नाम लेत सन्तनको दरश देत ।
ईषत मुखचन्द्रबिन्दु सुन्दर सुखदायी ॥
हसन बोलन चतुरचाल अयन वयन दृगविशाल ।
भृकुटिकुटिल तिलक भाल नासिका सुहायी ॥
केशरको तिलक भाल मानो रवि प्रातः काल ।
मानो गिरि शिखर फोटि सुरसरि बहिरायी ॥
मोतिनकी कण्ठमाल तारागण उर विशाल ।
श्रवणकुण्डल झलमलात रतिपति छवि छायी ॥
सखासहित सरयुतीर विहरे रघुवंशवीर ।
तुलसीदास हरष निरखि चरणरज पायी ॥

––– तुलसीदास

भजोरे भैया राम गोविन्द हरि

खाम्बाज – कहरवा

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी ।
जप तप साधन कछु नहि लागत खरचत नहि गठरी ।।
सन्तत सम्पत सुख के कारण जासों भूल परी ।
कहत कबीरा राम न जा मुख ता मुख धूल भरी ।।

- कबीर

															म भ
ग जो	सा रे	ग भै	म या	प ठु	सां रा	– ऽ	नि म	नि गो	– ऽ	ध वि	प न्द	ग ह	म रि	– ऽ	– ऽ
– ऽ	निप जप	नि त	नि प	[सांरें सां सा	गं – ऽ	रें सां ध	सां] सां न	– ऽ	सांरें कछु	नि ना	नि हि	धग लाऽ	ध ऽ	ग ग	म त
– ऽ	धध खर	ध च	ध त	नि त्र	ध हि	म ग	ग ठ	म रि	– ऽ	– ऽ	म भ	ग जो	सा रे	ग भै	म या

गुरु कृपाञ्जन पायो मेरे भाई

यमन - त्रिताल

गुरु कृपाञ्जन पायो मेरे भाई
राम बिना कछु जानत नाही ।।
अन्तर राम बाहिर राम जहँ देखौं तहँ रामहि राम ।।
जागत राम सोवत राम सपने में देखौं राजाराम ।।
कहत कबीरा अनुभव नीका जो देखौं सो राम सरीखा ।।

- कबीर

नि गु	रे रु	रे कृ	गप पाऽ	म॑ग ऽऽ	रे ञ्ज	ग न	– ऽ	प पा	– यो	– मे	– रे	म॑ भा	धप ऽऽ	म॑ ई	ग ऽ
नि रा ज	रे म हँ	– बि दे	ग ना खौं	– ऽ ऽ	प क त	प छु हँ	– ऽ ऽ	रे जा रा	ग न म	प त हि	गरे नाऽ राऽ	गरे ऽऽ ऽऽ	सा ई म	– ऽ ऽ	नि ऽ ऽ
प अ	ग ऽ	रे न्त	ग र	प रा	– ऽ	– म	– ऽ	म॑ बा	ध ऽ	नि हि	ध र	प राऽ	म॑ ऽऽ	ग म	– ऽ
म॑ ज	– हँ	ध दे	म॑ध खौंऽ	निसां ऽऽ	सां त	– हँ	– ऽ	नि रा	ध ऽ	नि म	ध हि	प राऽ	म॑ ऽऽ	ग म	– ऽ

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन

हमीर – तेवरा

												सा श्री	रे ऽ
ग रा	– ऽ	ग म	ग च	– ऽ	म न्द्र	ग कृ	रे पा	ग ऽ	रे लु	नि़ भ	सा ज	नि़ म	ध़ न
नि़ ह	रे र	रे न	म॑ भ	म॑ व	म॑ भ	प य	म दा	गरे ऽऽ	ग रु	सा ण	– ऽ	म॑ म्	ग ऽ
प क	– ऽ	प ञ्ज	प लो	– ऽ	प च	प न	प क	निधनि ऽऽऽ	ध ञ्ज	म॑ मु	प ख	म॑ क	ग र
रे क	– ऽ	रे ञ्ज	ग प	म॑ द	प क	– ऽ	रे ञ्जा	ग ऽ	रे रु	सा ण	– म्		
प क	म॑ न्द	ग र्प	म॑ अ	ध ग	म॑ णि	ध त	सां अ	सां मि	सां त	नि छ	रें वि	सां न	सां व
नि नी	– ऽ	नि ल	नि नी	– ऽ	नि र	नि ज	नि सु	म॑ध ऽऽ	निसां ऽऽ	नि न्द	ध ऽ	नि र	प म्
प पी	– ऽ	प त	प मा	– ऽ	प न	प हुँ	प त	नि डि	ध त	म॑ रु	प चि	म॑ शु	ग चि
रे नौ	– ऽ	रे मि	ग ज	म॑ न	प क	– ऽ	प सु	रे ता	ग ऽ	रे व	सा र	– म्	– ऽ

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन

हमीर – तेवरा

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भव भय दारूणम् ।
नवकञ्जलोचन कञ्जमुख कर कञ्ज पदकञ्जारूणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनीलनीरद सुन्दरम् ।
पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशल चन्द दशरथनन्दनम् ॥
सिरमुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अङ्गविभूषणम् ।
आजानुभुज शर चापधर संग्रामजितखरदूषणम् ॥
इति वदत तुलसीदास शंकर शेषमुनिमनरञ्जनम् ।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरू कामादि खलदल गञ्जनम् ।

––– तुलसीदास

पिब रे रामरसं रसने पिब रे रामरसम

यमन - त्रिताल

पिब रे रामरसं रसने पिब रे रामरसम् ।।
दूरीकृत पातक संसर्ग पूरित नानाविध फलवर्गम् ।।
जनन मरण भय शोकविदूरं
सकल शास्त्रनिगमागम सारम् ।।
परिपालित सरसिज गर्भाण्डं परम पवित्रीकृतपाषण्डम् ।।
शुद्ध परमहंसाश्रम गीतं
शुक शौनक कौशिक मुख पीतम् ।।

- सदाशिव ब्रह्मेन्द्र

ग	म	ग	रे	ग	प	ध	प	म	म	–	[illegible]	ध	प	ध	–
पि	व	रे	ऽ	रा	ऽ	म	र	स	म	ऽ	ऽ	र	स	ने	ऽ
ध	सां	सां	–	सां	–	नि	रें	सां	सां	–	–	नि	सां	नि	ध
पि	व	रे	ऽ	रा	ऽ	म	र	स	म	ऽ	ऽ	र	स	ने	ऽ
ग	म	ग	रे	ग	प	ध	प	म	म	–	–	–	–	–	–
पि	व	रे	ऽ	रा	ऽ	म	र	स	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	ध	सां	प	प	म	–	ग	म	ग	रे	ग	ग	प	प
दू	ऽ	री	ऽ	कृ	त	पा	ऽ	त	क	स	म्	स	र्	ग	म
ग	–	प	प	ध	–	सां	–	नि	सां	निध	प	ध	ध	–	–
पू	ऽ	रि	त	ना	ऽ	ना	ऽ	वि	ध	फऽ	ल	व	र्	ग	म

सुनो रे मन अमृत भरा है

मिश्र — कहरवा

सुनो रे मन अमृत भरा है, रामचन्द्र का नाम मनुवा ।।
जनम जनम भर राम भजन कर पूरके मन का काम ।
सीताराम सीताराम बोलो बोलो सियाराम ।।
नारायण नरवेश पहावे राजपूत बन जगत में आवे ।
अपार लीला जग को दिखावे भज ले से वही राम ।।

प	नि	पनि	सांरें	सां	–	–	–	नि	ध	प	ध	प	–	–	–
सु	ऽ	नोऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	सु	ऽ	नोऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
प	नि	पनि	सांरें	सां	–	सां	सां	नि	नि	नि	नि	ध	–	प	–
सु	ऽ	नोऽ	ऽऽ	रे	ऽ	म	न	अ	मृ	त	भ	रा	ऽ	है	ऽ
प	–	–	म	ग	–	ग	म	प	–	–	म	ग	रे	सा	–
रा	ऽ	ऽ	म	च	न्	द्र	का	ना	ऽ	ऽ	म	म	नु	या	ऽ
सा	–	–	रे	म	–	प	प	नि	ध	प	ध	प	–	–	प
रा	ऽ	ऽ	म	च	न्	द्र	का	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
प	प	प	प	म	प	ग	म	प	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां
ज	न	म	ज	न	म	भ	र	रा	ऽ	म	भ	ज	न	क	र
सां	–	रें	गं	रें	रें	सां	–	नि	–	–	–	सां	–	–	सां
पू	ऽ	र	के	म	न	का	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म

प्रेममुदित मनसे कहो राम राम राम

कानाडा — दादरा

सा	–	रे	रे	सा	रे	ग	–	रे	सा	ध़	–
प्रे	ऽ	म	मु	दि	त	म	न	से	क	हो	ऽ
ग	–	ग	ग	रे	ग	म	–	म	–	–	म
रा	ऽ	म	रा	ऽ	म	रा	ऽ	म	ऽ	ऽ	श्री
म	–	प	ग	म	ग	रे	–	रे	–	–	रे
रा	ऽ	म	रा	ऽ	म	रा	ऽ	म	ऽ	ऽ	श्री
सा	रेग	रे	सा	ध़	सा	ग	–	रे	–	–	–
रा	ऽऽ	म	रा	ऽ	म	रा	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	ध	ध	–	सां	सां	नि	सां	ध	–
पा	ऽ	प	क	टे	ऽ	दु	:	ख	मि	टे	ऽ
प	–	ध	सां	नि	सां	रें	–	रें	–	–	–
ले	ऽ	त	रा	ऽ	म	ना	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ
गं	गं	गं	गं	–	गं	रें	सां	रें	नि	–	ध
भ	व	स	मु	ऽ	द्र	सु	ख	द	ना	ऽ	व
प	–	ध	पध	सां	ध	प	–	म	–	–	रे
ए	ऽ	क	राऽ	ऽ	म	ना	ऽ	म	ऽ	ऽ	श्री
सा	रेग	रे	सा	ध़	सा	ग	–	रे	–	–	–
रा	ऽऽ	म	रा	ऽ	म	रा	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ

प्रेममुदित मनसे कहो राम राम राम

कानाडा — दादरा

प्रेममुदित मन से कहो राम राम राम
श्री राम राम राम श्री राम राम राम ।।
पाप कटे दुःख मिटे लेत रामनाम
भवसमुद्र सुखद नाव एक रामनाम ।।
परम शान्ति सुखनिधान नित्य रामनाम
निराधारको आधार एक रामनाम ।।
परम गुप्त परम इष्ट मन्त्र रामनाम
सन्तहृदय सदा बसत एक रामनाम ।।
महादेव सतत जपत दिव्य रामनाम
कासि मरत मुक्त करत कहत रामनाम ।।
माता पिता बन्धु सखा सबहि रामनाम
भकतजनन जीवनधन एक रामनाम ।।

प	–	पनि	सांरें	सां	–	–	सां	नि	ध	प	ध	प	–	–	प
सी	ऽ	ताऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ	म	सी	ऽ	ता	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म
ग	–	ग	ग	रे	–	सा	सा	रे	–	–	–	–	–	–	रे
बो	ऽ	लो	बो	लो	ऽ	सी	या	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
सा	–	रे	रे	म	–	प	प	नि	ध	प	ध	प	–	–	प
बो	ऽ	लो	बो	लो	ऽ	सी	या	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
म	–	म	म	म	म	म	म	ग	–	ग	म	ग	–	रे	–
ना	ऽ	रा	ऽ	य	न	न	र	वे	ऽ	श	प	हा	ऽ	वे	ऽ
म	–	म	म	–	म	म	म	प	प	प	प	प	म	प	–
रा	ऽ	ज	पू	ऽ	त	ब	न	ज	ग	त	मे	आ	ऽ	वे	ऽ
प	ध	–	ध	ध	–	ध	प	नि	नि	नि	–	नि	सां	सां	–
अ	पा	ऽ	र	ली	ऽ	ला	ऽ	ज	ग	को	ऽ	दि	खा	वे	ऽ
नि	सां	रें	गं	रें	–	सां	रें	नि	–	–	–	सां	–	–	सां
भ	ज	ले	ऽ	से	ऽ	व	ही	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म

रघुवर तुमको मेरी लाज

पीलु – कहरवा

रघुवर तुमको मेरी लाज ।।
सदा सदा मैं सरन तिहारी तुम ही गरीबनिवाज ।।
पतित उधारन बिरद तिहारो स्त्रवनन सुनी आवाज ।।
हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ।।
अघखण्डन दुःखभञ्जन जन के यही तिहारो काज ।।
तुलसीदास पर किरपा कीजै भक्तिदान देहु आज ।।

- तुलसीदास

प	ध	म	प	सां	सां	ध	प	–	म	प	ग	म	–	म	–
र	घु	व	र	तु	म	को	ऽ	ऽ	मे	ऽ	री	ला	ऽ	ज	ऽ
ग	सा	–	ग	म	–	म	–	ध	ध	ध	ध	पध	पध	म	–
स	दा	ऽ	स	दा	ऽ	मैं	ऽ	च	र	ण	ति	हाऽ	ऽऽ	री	ऽ
						[रें	सां]								
ध	ध	ध	ध	ध	नि	ध	नि	ध	–	–	प	प	ध	म	प
तु	म	हि	ग	रि	ऽ	ब	नि	या	ऽ	ऽ	ज	र	घु	व	र
म	म	ध	नि	सां	–	सां	सां	ध	नि	रें	सां	ध	–	म	–
प	ति	त	उ	द्धा	ऽ	र	ण	वि	र	द	ति	हा	ऽ	रो	ऽ
						[रें	सां]								
ध	ध	ध	ध	ध	नि	ध	नि	ध	–	प	–	प	ध	म	प
ख	व	न	न	सु	नी	ऽ	आ	वा	ऽ	ज	ऽ	र	घु	व	र

राघवं करुणाकरं भवनाशनं दुरितापहम्

बिहाग - त्रिताल

राघवं करुणाकरं भवनाशनं दुरितापहम्
माधवं खगगामिनं जलरूपिणं परमेश्वरम् ।
पालकं जनतारकं भवहारकं रिपुमारकम्
त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ।।
चिद्घनं चिरजीविनं मणिमालिनं वरदोन्मुखम्
श्रीधरं धृतिदायकं बलवर्धनं गतिदायकम् ।
शान्तिदं जनतारकं शरधारिणं गजगामिनम्
त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ।।

- आनन्दरामायणम्

–	ध	प	ध	म	–	ग	रे	प	–	–	प	प	–	प	प
ऽ	रा	ऽ	घ	वं	ऽ	क	रु	णा	ऽ	ऽ	क	रं	ऽ	भ	व
धप	म	ध	प	ध	–	ध	सां	प	–	–	प	म	–	धप	ध
नाऽ	ऽ	ऽ	श	नं	ऽ	दु	रि	ता	ऽ	ऽ	प	हं	ऽ	ऽऽ	ऽ
सां	–	–	ध	सां	–	ध	ध	सां	–	–	ध	सां	–	रें	सां
मा	ऽ	ऽ	ध	वं	ऽ	ख	ग	गा	ऽ	ऽ	मि	नं	ऽ	ज	ल
ध	–	–	प	ध	–	ध	सां	प	–	–	प	म	म	धप	ध
रू	ऽ	ऽ	पि	नं	ऽ	प	र	मे	ऽ	ऽ	श्व	र	म	ऽऽ	ऽ
–	म	ग	म	सा	–	ग	ग	म	–	–	म	म	–	म	म
ऽ	पा	ऽ	ल	कं	ऽ	ज	न	ता	ऽ	ऽ	र	कं	ऽ	भ	व
प	–	–	प	प	–	प	प	धप	म	–	प	ध	–	धप	ध
हा	ऽ	ऽ	र	कं	ऽ	रि	पु	माऽ	ऽ	ऽ	र	कं	ऽ	ऽऽ	ऽ